© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 09 | October – December 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

इक्कीसवीं सदी और नारी का बदलता रूप

डॉ. नीलम, सहायक प्राध्यापक, हिन्दू कन्या महाविद्यालय, जीन्द।

© iJRPS International Journal for Research Publication & Seminar

आधुनिक जीवन, बढ़ता हुआ शहरीकरण, शिक्षा, विज्ञान, तंत्र–ज्ञान आदि ने नारी के जीवन पर भी प्रभाव डाला है। नारी में अपने स्व को लेकर जागरुकता एवं अस्तित्व बोध निर्माण हुआ है। आज की नारी हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर निर्भीक होकर बड़ी कुशलतापूर्वक कार्य कर रही है। वह हर क्षेत्र में अच्छे से अच्छे परिणाम दे रही है। विकास और प्रगतिशीलता के इस दौर में नारी केवल पृथ्वी तक ही सीमित नहीं है। उसने अंतरिक्ष तक बड़ी कुशलता एवं साहस के साथ पुरुष के साथ कंधा से कंधा मिलाकर कार्य किया है, कर रही है। नारी के इस बदलते स्वरूप एवं जागरुकता का प्रभाव हर क्षेत्र में पड़ा है। इक्कीसवीं सदी के जागरुक युग में नारी स्वयं को सफल बनाने की चेष्टा में है। शिक्षित नारी अपने अधिकारों के प्रति सजग है। इसी सजगता को पुष्पा सक्सेना ने अपनी कहानी 'सच' में दिखाया है जिसमें बिन्नी के पढाई पूरी कर अमेरिका जाने की बात जब उसकी माँ का दिल दहला देती है तो सुमती देवी बिन्नी की माँ शारदा को समझाती हुई कहती है –

''उसका अपना भविष्य है शारदा, उसे जाने दे। शादी के बाद भी क्या मिल पाता है ?[1]

पुष्पा सक्सेना की कहानी 'तंत्तापानी' में भी अनु जो कि उच्च शिक्षित प्रतिभाशाली नारी है और जब अनु इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए शिमला जाना चाहती है तो उसकी दादी विरोध करती है तो उसकी माँ अनु के पिता को उसके विदेश जाने की बात पर समझाती है–

"आज अकेली लड़की अमेरिका, इंग्लैंड तक जा सकती है। हमारी अनु शिमला ही तो रहेगी, इंजीनियर बन अपने पांव पर खड़ी हो सकेगी, किसी की मोहताज तो न रहेगी।"[2]

---

[1] हंस पत्रिका, जनवरी 1998, राजेन्द्र यादव, पृ॰ 311
[2] वही, फरवरी, 1994, पृ॰ 57

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 09 | October – December 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

नारियों में इसी तरह अपने भविष्य के प्रति जागृति उत्पन्न हुई है। आज की नारी के जीवन के समस्त मूल्य बदल गये है। इस युग की नारी अत्यधिक सजग हुई है। वह चुपचाप जुल्म बर्दाश्त न कर अपने व्यक्तित्व के प्रति जागक है व न केवल सामाजिक अपितु धार्मिक, आर्थिक आदि समस्त क्षेत्रों के प्रति उसके दृष्टिकोण में बदलाव दिखाई देता है।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'फैसला' में नारी जागरण की छवि स्पष्ट है –

वसुमती अपने पति से ज्यादा पढ़ी–लिखी है। वह जब गाँव की प्रधान बनती है तो अनपढ़ झसुरिया कहती है –

"सांची कहना, तू ग्यारह किलास पढ़ी है न ? और रणवीर नौ फेल? बताओ कौन हुसियार हुआ।[1]

महारानी लक्ष्मीबाई व बेगम हजरत महल महिलाओं की प्रेरणा है कि महिलाएँ किसी भी रूप में पुरुषों से पीछे नहीं है। महिलाओं की वाणी को ऊपर उठाने में अनेक संस्थाओं, संगठन, बुद्धिजीवी वर्ग व मीडिया का हाथ है इसमें संदेह नहीं है। मीडिया का प्रभाव ही है जिस कारण स्त्री को नया साहस व वाणी मिली है। आज की नारी में पीड़ित की आवाज को मुखर करने की क्षमता विद्यमान है। अब तक का साहित्य मृत्यु को वरण कर स्त्री के आदर्श रूप का प्रतिनिधित्व करता था, लेकिन आज की नारी का स्वयं का अहम् है वह भेदभाव सहना नहीं चाहती। स्व–अस्तित्व क साथ अपनी अस्मिता की पहचान ही इक्कीसवीं सदी की नारी की विशेषता है। जो उसके उत्कर्ष में हर तरह से सहयोगी है। उषा महाजन की कहानी 'ऐन्टिक' में नारी जागरण एवं नारी अस्तित्व बोध का चित्रण हुआ है। नारी गोगी को अपने बॉय फ्रैन्ड के साथ देख जब माँ को आश्चर्य के साथ डर लगता है तो इस बारे में वह गोगी से कुछ कहती है परन्तु गोगी उसके प्रति उत्तर में कहती है –

[1] वही, अप्रैल 1993, पृ॰ 37

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 09 | October – December 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

"माँ प्लीज आप किस दुनिया में जी रही है। हम लोग साथ पढ़ते हैं दिनभर साथ काम करते हैं, साथ–साथ घूमने–फिरने जाते है। हम एक–दूसरे के जेंडर के बारे में नहीं सोचते रहते हैं कि कौन लड़का है और कौन लड़की है। हम लोग मस्तिष्क के स्तर पर कम्युनिकेट करते हैं आपस में।"[1]

भारत की बुद्धिजीवी महिलाएं पहले माँ, बहन, बेटी, पत्नी है और फिर बाद में कार्यकर्ता महिला फिर चाहे वो इंजीनियर, डॉक्टर, लेखक हों। आज बदलते समाज के साथ महिलाआ की संख्या हर क्षेत्र में बढ़ी है और नारी को अपने अस्तित्व और कर्त्तव्य की पहचान हुई है। स्त्री की आत्मनिर्भरता ने पुरुष के साथ के सम्बन्धों में भी बदलाव किया है।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'फैसला' में वसुमती अपने अधिकारों के प्रति सजग होती हुइ दिखाई देती है –

''ए ऽऽ सब जनी सुनो ? सुन लो कान खोल के ? बरोबरी का जमाना आ गया। अब ठठरी बंधे मरद मारा – कुटी करें, गारी – गराजदें, मायके न भेजें, पीहर से रूपइया पइसा मँगुवाव क्या कहते हैं कि दायजे के पीछे सतावें, तो बन सूधी चली जाना बसुमती क ढिग। लिखवा देना कागद करवा देना नठुओं के जेहल।"[2]

डॉ॰ सरला दुआ के अनुसार – "इस गतिशील युग की नारी अपने को सतत सफल बनाने की चेष्टा में है। शिक्षिता नारी अपने अधिकारों के प्रति सजग है और वह अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं करके अपनी स्थिति को उच्च बनाने में संलग्न है।[3]

बदलते परिवेश के साथ महिलाओं की सोच में आए परिवर्तन को सूक्ष्मता से स्वयं महिला कथाकारों ने भी वर्णित किया है। डॉ॰ भारती शेळके कहती है –

[1] हंस पत्रिका – मार्च 2000, राजेन्द्र यादव, पृ॰ 21
[2] हंस पत्रिका – अप्रैल – 1993, राजेन्द्र यादव, पृ॰ 37
[3] साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास में नारी, डॉ॰ नीलम मैगजीन, गर्ग – पृ॰ 81

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 09 | October – December 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

"महिला कथाकारों ने हर एक सूक्ष्म पहलू को भावात्मक स्तर पर विश्लेषित करने का प्रयत्न किया है। बदलते परिवेश का परिणाम निश्चित ही समस्त सम्बन्धों पर हो रहा है।"[1]

1995 में 'बीजिंग कार्य मंच' में विश्व की 180 से भी अधिक सरकारों ने इस बात पर सहमति की मुहर लगाई थी कि "महिलाएं निर्णय लेने में पुरुषों और महिलाओं की समान भागीदारी सुनिश्चित करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक संतुलन कायम करेंगी और उसकी आवश्यकता भी है, जिससे प्रजातंत्र मजबूत बने और उसकी कार्यविधि उचित रूप में चलें।"[2]

संयुक्त राष्ट्र संघ के हुए राष्ट्रीय सम्मेलन में महिलाओं को सुरक्षात्मक कवच और सामूहिक शक्ति का स्वरूप प्रदान किया जाए।

महादेवी वर्मा के शब्दों में – "नारी केवल मांस पिंड की संज्ञा नहीं है। आदिम काल से आजतक विकास पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभिशापों को झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शील भरकर मानवी ने जिस व्यक्तित्व चेतना और हृदय का विकास किया है, उसी का पर्याय नारी है।"[3]

बदलते युग में स्त्रियों का अपना व्यक्तित्व है। आज न तो वो पुरुषों की सम्पत्ति है। न भोग सामग्री और न ही पतिव्रता। वे जीवन साथी है और उनके व्यक्तित्व की पूरक भी।

आज की नारी में धैर्य है, अत्याचार सहने के लिए वो तैयार नहीं है। न ही उसे पतिनुमा वैशाखी की आवश्यकता है। वर्तमान युग में परिवर्तित विचारों के कारण नारी के प्रति कुंठित विचारों में भी परिवर्तन आया है। अपनी बौद्धिकता के कारण वह अंधेरी कोठरी से बाहर निकलकर प्रकाश में आई। जया जादवानी की कहानी 'परिदृश्य' की माधावी ऐसे ही अपने

[1] साठोत्तरी लेखिकाओं की कहानियों में परिवार डॉ॰ भारती शेव्ठके – पृ॰ 221
[2] समकालीन साहित्य समाचार, वर्ष 24, अंक 12, दिसम्बर 2015, पृ॰ 40
[3] महिला उपन्यासकारों की सामाजिक चेतना, डॉ॰ सुनीता सक्सेना, पृ॰ 44

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 09 | October – December 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

अधिकारों को हासिल करना चाहती है। वह अपने स्वच्छंदतावादी शकी परंपरावादी पति का विरोध करती है और अपने अधिकारों को पा लेती है –

"हाँ बहुत। आज मैं अपने पिंजड़े से निकल ऊपर आसमान में आ गई हूं। अपने अतीत, संस्कारों और मूल्यों का पिंजड़ा छोड़कर.....। और उड़ना कितना सुखद, नहीं ?"[1]

परन्तु नारी जीवन की विडम्बना कि उसे पुत्रों से हीन समझा जाना, विलम्ब होने पर प्रश्नों की फुलझड़ी फुटना। आम बात है फिर चाह वो विवाहिता हो या अविवाहित आज भी उसे समाज परम्परागत आदर्शवादी लड़की के रूप में देखना चाहता है ऐसी उलझनों का सामना करती नारी की रिक्तता को मैहरोत्रा की कहानी 'सच' में प्रिया को झेलते हुए दिखाया गया है – जब प्रिया अपने कुली मित्र के साथ सैर करते हुए उसे उसका छोटा भाई रोहित देख लेता है व घर पहुँचकर पुरुष सत्ता के आगे विदेश स्त्री को पीटता है –

'हरामजादी दिन दहाड़े, उसके साथ घूमती है। फिर देखा तो टांगें तोड़ दूंगा।"[2]

आज आधुनिक युग में बढ़ती हुई यांत्रिकता, नगरीकरण के प्रभाव के कारण बढ़ती स्त्री–पुरुष की द्रिया व पनपती अकेलेपन की त्रासदी चित्रा मुद्गल की कहानी 'शून्य', 'बावजूद' में वर्णित है –

"जिन्दगी जीने के उसके अपने तेवर थे, लगातार कई दिनों की कोशिश के बावजूद वह अन्य दोस्तों की बीवियों की तरह 'ब्रिज' सीख नही पाई न व्हिस्की का दूसरा पेग ले सकी। अंग्रेजी फिल्में उसने दखी ही कम थी। फिर दृश्यों की चर्चा कैसे कर पाती। नतीजा झगड़ा जो मार–पीट में तबदील हो उठा, न व खुद को बदल सकी, न गोयल को।"[3]

---

[1] अंदर के पानियों में कोई सपना कांपता है, जया जादवानी, पृ॰ 58

[2] हंस पत्रिका, जनवरी – 1998, पृ॰ 22

[3] साठोत्तरी लेखिकाओं की कहानियों में परिवार – डॉ॰ भारती शेव्ठके, बावजूद इसके, चित्रा मुद्गल, प॰ 94

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 09 | October – December 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

आज समय बदल गया है मानव विकास के साथ–साथ परिवार में पारस्परिक आत्मीय सम्बन्धों में परिवर्तन दिखाई देने लगा है। नूतन परिस्थितियाँ, परिवर्तित परिवेश आदि के प्रभाव परिवार पर भी लक्षित होने लगे है। प्रथाओं व परम्पराओं का प्रभाव परिवार के ढाँचे पर ही नहीं परिवार के अन्तर्गत सम्बन्धों व संवेदनाओं पर भी लक्षित होने लगा है।

जिसका वर्णन चित्रा मुद्गल की 'रूना आ रही, लिफाफा, अपनी वापसी आदि में चित्रित है जिसमें हरीश और शकुन में कौन–सी दूरी निर्माण हो गयी है। यही शकुन को समझ में नहीं आ रहा है "––– शकुन को समझ नहीं आ रहा था ––" दोनों के बीच कौन–सी खाई है? ––– अब ऐसा क्यों हो गया है ––– वह बदल गयी है या हरीश या समय।"[1]

भारत में नारी का व्यक्तित्व प्रेम और विवाह के मध्य विकसित होता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् तो प्रेम का स्वरूप भी बदला है। प्रेम में सतहीपन का चित्रण अधिक होने लगा है। यही कारण है कि प्रेम में आए आर्थिक रूप की आत्मनिर्भरता का प्रभाव पड़ा है व विवाह सम्बन्धों में भी नवीनता उत्पन्न हुई है। प्रेम सम्बन्धों में जहां पवित्रता है वही विकृतता भी व्याप्त है। युग परिवर्तन के साथ स्त्रियों के कार्यक्षेत्र में भी परिवर्तन व्याप्त है। इस अनुभव के साथ स्त्री के लिए अब प्रेम की अंतिम परिणति विवाह नहीं है। विवाह अब पुरुष को देवता का दर्जा नहीं प्रदान करता। आज की स्त्रियां भावुकता को नकारती दिखाई देती है। स्त्री केवल पत्नी व प्रेमिका नहीं। उषा महाजन की कहानी 'एन्टीक' की गोगी ऐसी ही स्वच्छंदता का प्रतीक है जिसमें स्वच्छन्दता व खुलापन व्याप्त है।

आज अन्य क्षेत्रों के साथ महिलाएं राजनीति में भी सम्मिलित हो रही है। सर्वप्रथम डॉ॰ राम मनोहर लोहिया ने महिलाओं के लिए आरक्षण देने की माँग की थी। प्रसिद्ध समाजवादी चिंतक सुरेन्द्र मोहन ने कहा था –

[1]अपनी वापसी – चित्रा मुद्गल पृ॰ 14

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 09 | October – December 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

"नारियों को नरों की बराबरी की वकालत करने वाले सभी नेता वही थे जो अगड़ी – पिछड़ी जातियों की समानता के हिमायती थे।"[1]

इक्कीसवीं शती का परिणाम ही है कि आज नारियों को हर क्षेत्र में 33 प्रतिशत आरक्षित सीटें प्राप्त है। पंचायत समिति में तो एक तिहाई ऐसी ग्राम पंचायतें है जिनकी अध्यक्ष सिर्फ महिलाएं ही बन सकती है। इसके अतिरिक्त सभी सामान्य सीटों पर वे चुनाव लड़ सकती ह। साथ ही स्थानीय स्तर पर उनमें स्वचेतना, आत्मविश्वास तथा अस्तित्वबोध का प्रस्फुटन हुआ है।

हालांकि बढ़ती नवीन शति व महिलाओं में बढ़ते नवीन संदर्भों के फलस्वरूप आधुनिक जीवन की मान्याओं में बदलाव दृष्टिगोचर होता है जिनमें विज्ञापन में स्त्री, असंतुष्ट पारिवारिक सम्बन्ध, पुरुष सत्ता के वर्चस्व का विरोध, दाम्पत्य सम्बन्धों में टूटन, नारी विमर्श, वैश्विक संदर्भों के चलते नारी में साहस व समयोचित निर्णय क्षमता का विकास हुआ है।

सितम्बर, 2000 में हुई शताब्दी शिखर वार्ता में विश्व के राष्ट्रों द्वारा लिंग समानता और नारी–सशक्तिकरण के लक्ष्य की प्राप्ति के निर्णय लिए गए, परन्तु यह भी सत्य है कि एक रिर्पोट के अनुसार एक भी मिनट ऐसा नहीं बीतता जब संवैधानिक संरक्षण के बावजूद स्त्री पर अन्याय–अत्याचार न हुआ हो। आज भी हमारे समाज में व्याप्त, पितृसत्ताक प्रवृति नारी विमर्श साहित्य का मार्ग अवरूद्ध कर रही है। जिसमें नारी विमर्श के पुनर्लेखन की आवश्यकता अत्यधिक है।

आज समाज बदल रहा है। नारी बड़ी ताकत बनकर उभर रही है। केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड द्वारा प्रतिपादित सूत्र वाक्य – 'आज की कन्या कल की नारी, समता सम्मान की अधिकारी' के उन्नयन–उत्कर्ष हेतु समाज को ओर भी अधिक प्रयासरत होना होगा व इस सत्य को स्वीकार करना होगा कि महिलाओं की प्रगति ही समाज, राष्ट्र व मानवता को पोषण

[1] समकालीन महिला लेखन, डॉ॰ ओमप्रकाश शर्मा, पृ॰ 120

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 09 | October – December 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

प्रदान कर परम्परा के मूल्य को विकसित कर वास्तविक आधुनिक बोध से सम्पन्न कर सकती है।

डॉ. नीलम
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दू कन्या महाविद्यालय, जोन्द।

सन्दर्भ सूची

1.	हिन्दी कहानी और नारी	विमर्श के अहम् सवाल डॉ॰ शोभा पहार (निबालंकर) अन्नपूर्णा प्रकाशन, 127/1100 डब्ल्यू वन, साकेत नगर, कानपुर – 208014
2.	बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की कहानियों में नारी	डॉ॰ बबनराव बोडके विकास प्रकाशन, 311–सी, विश्व बैंक बर्रा, कानपुर – 208027
3.	महिला उपन्यासकारों की सामाजिक चेतना एवं शिक्षा	डॉ॰ सुनीता सक्सेना आशा पब्लिशिंग कम्पनी, एच.आई.जी. एच–24, 11 फलोर बाईपास रोड़, आगरा – 282004 (उ.प्र.)
4.	साढ़ोत्तरी लेखिकाओं की कहानियों में परिवार	डॉ॰ भारती शेव्ठके विद्या प्रकाशन सी–449, गुजैनी, कानपुर – 22
5.	स्त्री–विमर्श : साहित्यिक और व्यवहारिक सन्दर्भ	डॉ॰ करुणा उमेर अमन प्रकाशन, 104–ए/118, रामबाग, कानपुर।
6.	नवम् दशक की हिन्दी महिला कथाकारों	डॉ॰ आशा गुप्ता।

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 09 | October – December 2016
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

	को नारी–चेतना	कान्त पब्लिकेशन्स, 124 चन्द्रलोक एन्क्लेव दिल्ली–110034
7.	समकालीन साहित्य समाचार	वर्ष 24 अंक 12, दिसम्बर 2015, किताबघर प्रकाशन, 4855–56/24, अंसारी रोड़ – दरियागंज, नई दिल्ली–110002
8.	महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी	डॉ॰ हरबंश कौर विद्या प्रकाशन, सी–449 गुजैनी, कानपुर–22
9.	कृष्णा सोबती का कथा साहित्य एवं नारी समस्याएं	डॉ॰ शहेनाज जाफर बासमेह, अभय प्रकाशन, 6ए/540, आवास विकास हंसपुरम् कानपुर – 21
10.	हिन्दी साहित्य : नव–विमर्श	डॉ॰ जशवंत भाई जी पड्या ज्ञान प्रकाशन, 128/90, जी–ब्लाक किदवई नगर, कानपुर – 208011
11.	हिन्दी कहानी में नारी की सामाजिक भूमिका	डॉ॰ अनिल गोयल, आर्याना पब्लिशिंग हाउस, ई॰ जी॰, 132, इन्द्रपुरी, नई दिल्ली – 110012